

अभरिचि एवं लोकसेवक हेतु आवश्यक गुण

अभरिचि क्या है?

- अभरिचि कौशल सीखने या हासिल करने की एक प्राकृतिक क्षमता या जन्मजात क्षमता है। यह कुछ वशिष्ट कौशलों को सफलतापूर्वक सीखने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जिसे पर्याप्त ज्ञान और प्रशिक्षण के साथ और बढ़ाया जा सकता है। यह किसी वशिष्ट क्षेत्र में सफल होने के लिये उपयुक्तता को इंगित करता है।
- दूसरे शब्दों में अभरिचि एक प्राकृतिक प्रतभा या जन्मजात क्षमता है जो हमारे लिये कुछ चीजों/कार्यों को सीखना या करना आसान बनाती है।

अभरिचि, कौशल या बुद्धिमिता से किस प्रकार भिन्न है?

- रुचि एक ऐसी चीज है जो किसी कार्य के प्रतिकिसी वशिष्ट कौशल की आवश्यकता के बिना हमें आकर्षित करती है। एक व्यक्ति की किसी वशिष्ट गतिविधि, नौकरी या प्रशिक्षण में रुचि हो सकती है, लेकिन उस वशिष्ट क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने और सफलता प्राप्त करने की क्षमता / योग्यता नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिये किसी की संगीत में गहरी रुचि हो सकती है, लेकिन एक कलाकार के रूप में करियर में सफल होने के लिये पर्याप्त क्षमता नहीं है।
- कौशल किसी दिये गए कार्य को आसानी और सटीकता के साथ करने का ज्ञान या क्षमता है, दूसरी ओर योग्यता प्रशिक्षण प्राप्त होने पर कुशल होने की क्षमता को दर्शाता है। जबकि कौशल वे क्षमताएँ हैं जिन्हें पढ़ने, अवलोकन, अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से हासिल किया जा सकता है, योग्यता जन्मजात और अद्वितीय है।
- बुद्धिमिता, तर्क करने, सीखने, समझने और मानसिक गतिविधियों के उपयोग की क्षमता है। यह कौशल सीखने और लागू करने की क्षमता है। दूसरी ओर, अभरिचि किसी व्यक्ति की किसी कौशल में महारत हासिल करने की वशिष्ट क्षमता है। हालाँकि अभरिचि की सहायता से काम को अच्छी तरह से करने के लिये कुछ हद तक बुद्धिमिता की आवश्यकता होती है।

एक सविलि सेवक की अभरिचि कैसी होनी चाहिये?

- नए लोक प्रशासन के आगमन और प्रशासनिक क्षेत्र में बढ़ती विविधता के साथ, एक प्रशासक को शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की अभरिचि होनी चाहिये।
- उसके पास न केवल कुशलतापूर्वक बल्कि, प्रभावी ढंग से अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये सामान्य मानसिक क्षमता (बुनियादी सोच क्षमता और किसी भी बौद्धिक कार्य को करने की सीखने की क्षमता) के साथ-साथ लोक प्रशासन की वांछित मूल्य प्रणाली दोनों होनी चाहिये। मोटे तौर पर एक सविलि सेवक में वांछित योग्यता के प्रकारों में शामिल हैं:
 - अच्छा संचार/पारस्परिक कौशल
 - नेतृत्व, प्रबंधन और संगठनात्मक कौशल
 - गंभीर सोच और सुनने की क्षमता
 - संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और बढ़ाने के लिये कौशल
 - सहयोगी नेटवर्क और सफल टीम वर्क स्थापित करने की क्षमता
 - व्यावसायिकता का उच्च स्तर
 - स्वयं सोचने और अभिनव समाधान विकसित करने की क्षमता
 - अनुनय का कौशल और ऐसे लोगों के साथ समझौता करने की क्षमता होनी चाहिये जिनके साथ समझौता करना आसान न होता हो।

सविलि सेवा में अभरिचि की भूमिका और महत्त्व क्या है?

- सविलि सेवाएँ प्रशासन की स्थायी संरचना बनाती हैं एवं रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करती हैं। इसलिये लोक प्रशासन के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिये एक गुणात्मक, पेशेवर, कुशल और प्रतबिद्ध कार्यबल अनविर्य है।
- भारतीय लोक प्रशासन में सविलि सेवकों को विभिन्न प्रकार की ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं जैसे कसिरल प्रशासनिक और लिपिकि कार्यों से लेकर जटिल नरिणय लेने, नीति कार्यान्वयन और सरकार और नागरिकों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करना। इसलिये सविलि सेवकों के पास विविध कौशल जैसे, किसी चीज को समझने की क्षमता, अच्छा वशिलेषणात्मक कौशल और सहयोगी नेटवर्क स्थापित करने की क्षमता और सफल टीम वर्क का होना महत्त्वपूर्ण है।

- लोक प्रशासन में नेताओं को हर दिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे उच्च बेरोजगारी, अपर्याप्त सरकारी खर्च, तेजी से बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य आदि। कानून और प्रशासनिक नियम सब कुछ स्पष्ट नहीं कर सकते हैं और नेता हमेशा पछिली सफलताओं को दोहरा नहीं सकते हैं क्योंकि प्रत्येक चुनौती को प्रभावित करने वाले दिन-प्रतिदिन बदलते हैं। ऐसे मामलों में एक सविलि सेवक को तत्काल नरिणय लेने के कौशल और दृढ़ विश्वास के साथ वकिल का उपयोग करने के लिये सोचने-समझने की क्षमता की अत्यधिक आवश्यकता होती है।
- ई-गवर्नेंस की उभरती अवधारणा और 'कम सरकार अधिक शासन' (Minimum Government Maximum Governance) का आदर्श वाक्य सरकार की मशीनरी के साथ-साथ कार्य शैली और सरकारी अधिकारियों के अनुमुखीकरण में परिवर्तनकारी परिवर्तन की मांग करता है।
 - प्रशासकों की भूमिका और कार्य तेजी से बदलते और तेजी से चुनौतीपूर्ण होते जा रहे हैं, इन नई चुनौतियों का सामना करने के लिये सविलि सेवकों को आवश्यक कौशल और क्षमताओं से लैस होना चाहिये।
 - उनमें नई तकनीकों और कार्य करने की नई शैलियों में महारत हासिल करने की योग्यता होनी चाहिये। उन्हें सुधार पहलों को उत्प्रेरित करने के लिये 'परिवर्तन के एजेंट' के रूप में कार्य करना चाहिये।
- भारत जैसे वविधिता वाले देश में सविलि सेवकों को अक्सर जटिल और अक्सर वषिम सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो अक्सर उनके अपने करतव्यों और कार्यों के बारे में नैतिक दुवधि की गहरी भावना पैदा करते हैं। यह अंतरवरीधों पर वजिय पाने, दुवधियों को सुलझाने और वपिरित परस्थितियों के बावजूद प्रदर्शन करने की भावना को बनाए रखने के लिये एक अंतरनहिति योग्यता की मांग करता है।
- 'समावेशी शासन' के ढांचे के तहत प्रशासकों को वविधि हतिधारकों के बीच टीम बनाने की जरूरत है। उदाहरण के लिये एक शहर में अनुकूल कारोबारी माहौल बनाने के लिये एक आर्थिक विकास नदिशक को स्थानीय व्यापारिक नेताओं, चैंबर ऑफ कॉमर्स और पर्यावरण अधविकताओं को एक साथ लाने की जरूरत है। यह एक सविलि सेवक को प्रतकिरिया प्राप्त करने और कार्य करने की क्षमता के साथ-साथ अंतराल को पाटने और एक सामान्य उद्देश्य के लिये सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिये प्रभावी पारस्परिक कौशल की मांग करता है।

अभरुचि एवं अभवित्त में क्या अंतर है?

- कुछ वशिषज्जों के अनुसार, सफलता 99% अभवित्त और 1% अभरुचि का परिणाम है। शोध अध्ययनों के अनुसार, सही कौशल वाले लोगों को भरती करना महंगा हो सकता है यदि उनके पास सही रवैया नहीं है।
 - लीडरशिप आईक्यू (3 वर्षों में 20,000 से अधिक नई भरतियों में से) के एक अध्ययन में, यह पाया गया कि काम पर रखे गए 46% लोग काम पर पहले 18 महीनों के भीतर असफल हो गए और वे कौशल की कमी के कारण असफल नहीं हुए, बल्कि अभवित्त के कारण असफल हुए। इस प्रकार उच्च योग्यता और गलत अभवित्त वाले लोगों की तुलना में सही अभवित्त वाले लोगों को संगठनात्मक सफलता के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
- अभवित्त एक मोटर है जो एक वशिषिट क्षमता के अधगिरहण और उपयोग को आगे बढ़ाती है। यदि कोई व्यक्ति किसी भूमिका के लिये पूरी तरह से तैयार है लेकिन उसमें वास्तविक उत्साह की कमी है तो सर्वोत्तम कौशल-सेट की क्षमता बहुत कम हो जाएगी।
 - उदाहरण के लिये एक व्यक्ति जिसमें संगीत के लिये अभरुचि है, लेकिन अपने कौशल को नखिराने की इच्छा की कमी है, वह उसे एक अच्छा संगीतकार नहीं बना सकता है, चाहे वह कतिना ही प्रतभिशाली क्यों न हो। इसके लिये किसी के कौशल को वकिसति करने और उसमें सुधार करने एवं सीखने के लिये प्रतसिपर्द्धा दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।
- जब एक सकारात्मक मानसिकता अपनाई जाती है तो लगभग हर स्तर पर उत्पादकता, रचनात्मकता और जुड़ाव में सुधार होता है। थॉमस एडसिन ने एक बार कहा था, "प्रतभि एक प्रतशित प्रेरणा और ननियानबे प्रतशित पसीना है।" इसलिये जीवन में सफल होने के लिये कड़ी मेहनत और लगन के प्रतसिकारात्मक नजरिया बेहद जरूरी है।

हमारे सामने रखे गए प्रत्येक कार्य में हम सभी समान रूप से प्रतभिशाली नहीं हैं:

- एक और दृष्टिकोण यह है कि हर किसी के पास कौशल सीखने की क्षमता नहीं होती है, खासकर एक कुशल स्तर पर। एक व्यक्ति जो उत्सुक है, लेकिन उसके पास कोई प्राकृतिक प्रतभि, क्षमता और कौशल नहीं है, वह शायद ही इस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के लिये, एक व्यक्ति जिसके पास एक नया व्यवसाय उद्यम शुरू करने की इच्छा और उत्साह है, लेकिन आवश्यक व्यावसायिक कौशल की कमी है, वह इसके दबाव और चुनौतियों के आगे झुक जाएगा। इस प्रकार एक अच्छा दृष्टिकोण/अभवित्त वाला व्यक्ति, जिसके पास कोई योग्यता नहीं, वह भी बेहतर नहीं कर सकता है।
- एक उच्च अभरुचि वाला व्यक्ति किसी कौशल को सीखने या किसी कार्य को करने में बेहतर प्रदर्शन कर सकता है जबकि अन्य इसके प्रतसिकारात्मक झुकाव के बावजूद संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिये खेल एक सामान्य गतिविधि है लेकिन केवल एक एथलीट या अद्वितीय प्रतभि और ताकत वाला खिलाड़ी ही इस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। महात्मा गांधी और जॉर्ज वाशिंगटन जैसे उत्कृष्ट नेताओं के पास अपनी ताकत को भुनाने और दूसरों में सबसे बड़ी क्षमता वकिसति करने के लिये महान कौशल और ज्ञान था।

अभरुचि के बिना अभवित्त अंधा है; अभवित्त के बिना अभरुचि लंगड़ा है:

- इस दृष्टिकोण के अनुसार, किसी वशिष क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिये सही अभवित्त (योग्यता) और अभरुचि (रवैया) दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। यह क्रमशः दो वरिसत में मलि और अर्जति गुणों का सही मशिरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन में लाभ और हानि को नरिधारित करने में साथ-साथ चलते हैं।
- उदाहरण के लिये एक व्यक्ति जो अपने काम में मेहनती और ईमानदार होने के साथ-साथ अपने संगठनात्मक लक्ष्यों के लिये प्रतबिद्ध है, लेकिन उसके पास सॉफ्ट स्किल्स की कमी के कारण पहल करने की क्षमता और नेतृत्व के लिये योग्यता की कमी है, उसे उच्च-स्तरीय पद के लिये उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। इसी तरह यदि किसी के पास स्मार्ट, प्रेरक और टीम-नरिमाण कौशल है, लेकिन काम के प्रतकठोर रविये के कारण उस पर उच्च अधिकारी बनने की स्थिति में उसपर भरोसा नहीं किया जा सकता है।
- थॉमस एडसिन और अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के उदाहरण हमें दिखाते हैं कि उनकी वशिषिट क्षमताओं के साथ-साथ चुनौतियों का

सामना करने और लगातार असफलताओं के बाद भी हार न मानने के लिये उनके पास सही स्वभाव/मानसिक दृष्टिकोण था ।

लोकसेवक हेतु आवश्यक गुण क्या हैं?

- सविलि/सार्वजनिक सेवा मूल्य वे मूल्य हैं जो जनता की तरफ से सरकार द्वारा बनाए जाते हैं । ये वे सदिधांत हैं जनि पर सरकार और नीतियां आधारति होनी चाहयि । सत्यनषिठा, वस्तुनषिठता, गैर-पक्षपात, सहषिणुता, करुणा, सार्वजनिक सेवा के प्रत समर्पण आदि जैसे मूलभूत मूल्यों का पालन, लोक सेवा करतव्यों के नरि्वहन में सविलि सेवकों के लयि मार्गदर्शक सदिधांतों के रूप में कार्य करता है । इसके अलावा वे उन अधिकारों और लाभों के बारे में मानक सहमतप्रदान करते हैं जनि के नागरकि हकदार हैं ।
- भारत में सविलि सेवा मूल्य वर्षों की परंपरा में वकिसति हुए हैं । केंद्रीय सविलि सेवा (आचरण) नयिम, 1964 और अखलि भारतीय सेवा (आचरण) नयिम, 1968 में सत्यनषिठा और करतव्य के प्रत समर्पण आदि जैसे मूल्यों का उल्लेख कयिा गया है, जनिका पालन एक सविलि सेवक को अपने सेवा कार्यकाल में करना चाहयि । इस बीच लोक सेवा वधियक, 2007 के मसौदे में कुछ ऐसे मूल्यों का उल्लेख कयिा गया है जो लोक सेवकों को उनके कार्यों के नरि्वहन में मार्गदर्शन करते हैं । इनमें संवधिन की प्रसतावना में नहिति वभिन्न आदर्शों के प्रतनिषिठा, गैर-राजनीतिक कामकाज, लोगों की बेहतरी के लयि सुशासन, सविलि सेवा का प्राथमकि लक्ष्य होना, नषिपक्ष और नषिपक्ष रूप से कार्य करना करतव्य, नरिणय लेने में जवाबदेही और पारदर्शति, रखरखाव शामिल हैं । उच्चतम नैतिक मानकों की योग्यता, सविलि सेवकों के चयन के लयि मानदंड होना, व्यय में अपव्यय से बचाव आदि ।
- **नोलन समति की सफारशि:**
 - जो लोग कसिी भी प्रकार से जनता की सेवा करते हैं, उनके लाभ के लयि नोलन समतिने, (सार्वजनिक जीवन में मानकों पर समति) ने वर्ष 1995 में सार्वजनिक जीवन के लयि व्यवहार के सात मार्गदर्शक सदिधांतों को परभाषति कयिा, जसिे नोलन सदिधांत कहते हैं, और सलाह दी कि सार्वजनिक संस्थाएँ इन सदिधांतों को एकीकृत करते हुए आचार संहति बनाएँ । सात नोलन सदिधांत इस प्रकार हैं:



- **नसि्वारथता:**
 - सार्वजनिक पद धारण करने वालों द्वारा जनहति में नरिणय लयि जाने चाहयि । अपने, अपने परिवार या अन्य मतिरों के लयि धन या अन्य भौतिक लाभ प्राप्त करने के लयि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहयि ।
- **अखंडता:**
 - सार्वजनिक कार्यालय के धारकों को कसिी भी तरह से, चाहे आर्थिक रूप से या अन्यथा, ऐसे बाहरी पार्टियों के लयि खुद को बाध्य नहीं करना चाहयि, जो उनके आधिकारिक दायित्वों को कैसे पूरा करते हैं, इस पर कोई भी दबाव डाल सकते हैं ।
- **वस्तुनषिठता:**
 - सार्वजनिक अधिकारियों को सार्वजनिक नयिकतियों, अनुबंध पुरस्कारों और प्रोत्साहनों और भत्तों के लयि सफारशों सहति सार्वजनिक व्यवसाय करते समय योग्यता के आधार पर अपने नरिणय लेने चाहयि ।
- **जवाबदेही:**
 - सविलि सेवकों को उनकी स्थतिके अनुसार जांच के दायरे में रखा गया है साथ ही, उन्हें जनता को उनकी पसंद और आचरण के लयि जवाब देना चाहयि ।
- **खुलापन:**
 - सभी वकिल्प और कार्य जो सार्वजनिक कार्यालय धारक करते हैं वे यथासंभव पारदर्शी होने चाहयि । जब व्यापक जनहति में स्पष्ट रूप से इसकी आवश्यकता होती है तो उन्हें अपनी पसंद के लयि औचितय प्रदान करना चाहयि और केवल आवश्यक होने पर ही जानकारी को प्रतबिंधति करना चाहयि ।
- **ईमानदारी:**
 - सार्वजनिक अधिकारियों की जमिेदारी है कि वे ऐसे कसिी भी नजिी हतियों की घोषणा करें जो उनके आधिकारिक दायित्वों के साथ संघर्ष कर सकते हैं और ऐसे संघर्षों को इस तरह से संभालना है जसिसे सार्वजनिक हतियों की रक्षा करते हैं ।

- **नेतृत्व:**
 - इन वचारों को बढ़ावा देने और समर्थन करने के लिये सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा नेतृत्व का उपयोग किया जाना चाहिये।
- **द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की 10वीं रिपोर्ट:**
 - तथापि लोक सेवाओं के लिये आचार संहिता के विकास के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की 10वीं रिपोर्ट में की गई सफ़ाई रही है। आयोग ने सफ़ाई की कसौटी के संवैधानिक भावना को बनाए रखने के अलावा, सविलि सेवकों को उन मूल्यों द्वारा निर्देशित होना चाहिये जिनमें सत्यनिष्ठता और आचरण के उच्चतम मानकों का पालन शामिल है जैसे- निष्पक्षता और गैर-पक्षपात; वस्तुपरकता; सार्वजनिक सेवा के लिये समर्पण; और कमज़ोर वर्गों के प्रति सहानुभूति और करुणा।
- **अखंडता:**
 - वफादारी से तात्पर्य किसी व्यक्ति की अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक मूल्यों और विश्वासों के अनुरूप और समर्पित रहने की क्षमता से है। इसका अर्थ है समान मानकों या नैतिक सिद्धांतों को समय-समय पर समान परिस्थितियों में और इच्छुक पार्टियों को अपनाना।
 - दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है वचारों, वाणी और कर्म में ईमानदार और सुसंगत होना। यह 'हम क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं और हम क्या करते हैं' के बीच के अंतर को दूर करने का एक गुण है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति कभी भी बाहर के विवादों और दबावों से प्रभावित नहीं होता है और केवल अपने वकिल के प्रति जिवाबदेह होता है।
- **निष्पक्षता:**
 - निष्पक्षता पूर्वाग्रह और पूर्वाग्रह के बिना निर्णय लेने की एक प्रकार का विशेष गुण है। निष्पक्षता का एक उदाहरण वह है जिसमें कोई पक्षपात नहीं है। यह किसी व्यक्ति, सामाजिक समूह या संगठन को अनुचित लाभ देने को अस्वीकार करता है। निष्पक्ष होने का अर्थ है कसौटी वकिल केवल योग्यता के आधार पर होने चाहिये।
- **गैर-पक्षपात:**
 - गैर-पक्षपात को किसी भी राजनीतिक दल का समर्थन न करने के अपने कार्य से जाना जाता है, भले ही कोई इसके आदर्शों से दृढ़ता से सहमत हो। गैर-पक्षपात किसी भी राजनीतिक दल, संगठन या समूह के आदर्शों के पालन की अनुपस्थिति है।
- **वस्तुनिष्ठता:**
 - निष्पक्षता को शासन में सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक माना जाता है। इसके लिये संस्थानों को तर्क, कानून और स्थापित मानकों, प्रथाओं और मानदंडों का पालन करने की आवश्यकता होती है। वस्तुनिष्ठता का अर्थ है किसी की भावनाओं, वचारों और विश्वासों के बावजूद सत्य होना। यह सार्वजनिक अधिकारियों को डेटा के आधार पर बुद्धिमानी निर्णय लेने की अनुमति देता है।
- **जनसेवा के प्रति समर्पण :**
 - समर्पण किसी के पेशे, उद्देश्य, दृष्टि या कार्यों में प्रेरित होने का गुण है। समर्पित लोक सेवक प्रशासन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। जनता की भलाई में काम करने के लिये एक आंतरिक ड्राइव या उत्साह सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण से नहिति है। उस इच्छा को चलाने के लिये किसी बाहरी औपचारिक तकनीक के बिना, यह कुछ ऐसा हासिल करने की प्रतिबद्धता, जुनून और ईमानदार इच्छा है जो महत्त्व रखता है।
- **सहानुभूति:**
 - अन्य लोगों के अनुभवों और भावनाओं को समझने और उनकी सहायता करने की क्षमता को सहानुभूति के रूप में जाना जाता है। यह किसी अन्य व्यक्ति की मानसिक स्थिति को समझने और दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को रचनात्मक रूप से अनुभव करने की क्षमता है।
- **सहनशीलता:**
 - दूसरों से मतभेदों को स्वीकार करने और सहन करने की क्षमता, भले ही आप उनसे असहमत हों, को सहिष्णुता के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। सहिष्णुता लोगों के लिये सद्भाव में रहना संभव बनाती है। विभिन्न प्रकार के वचारों और विश्वासों के सामने लोगों का लचीलापन उनकी सहनशीलता को प्रदर्शित करता है। दुनिया भर के अन्य दृष्टिकोणों और अवधारणाओं के बारे में अधिक जानने से आपको दुनिया को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिल सकती है।
- **करुणा:**
 - यह सहानुभूति का एक गहरा स्तर है, जो पीड़ित व्यक्ति की मदद करने की वास्तविक इच्छा को प्रदर्शित करता है। यह दूसरों की पीड़ा के लिये सहानुभूति की एक अनूठी भावना है जिसमें दूसरों के प्रति भावनाएँ और सहानुभूति, समझ की भावना और रक्षा करने की इच्छा शामिल है।
 - नोलन सिद्धांत अभिनिव थे जब उन्हें पहली बार सामने रखा गया था क्योंकि उन्होंने कार्यप्रणाली की तुलना में संस्कृति और व्यवहार पर अधिक ध्यान केंद्रित किया था, हालाँकि मौलिक वचारों को अनविरत रूप से सभी द्वारा स्वीकार किया जाता है, उन्हें वास्तविकता में रखने में हमेशा चुनौतियाँ होती हैं, कुछ कर्षत्रों को अपनाने के साथ और उन्हें दूसरों की तुलना में अधिक सफलतापूर्वक लागू करना। कमीशनगि वकिल चुनते समय, एनएचएस ने सिद्धांतों को लागू करने में हमेशा अतिरिक्त सावधानी बरती है

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

Q. एक प्रभावी लोक सेवक बनने के लिये आवश्यक दस आवश्यक मूल्यों की पहचान कीजिये। लोक सेवकों में गैर-नैतिक व्यवहार को रोकने के तरीकों और साधनों का वर्णन करें। (वर्ष 2021)